जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जुलाई 2025 ।। अंक – 60 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बनाई अपनी अलग पहचान (पृष्ठ – 02)

साहस, समर्थन और मेहनत का संगम (पृष्ठ – 03)

लहठी व्यवसाय से स्वीटी को मिली नई पहचान (पृष्ठ – 04)

जीविका के प्रयास से गाँव में हो रहा सूक्ष्म उद्यमों का विकास

गाँवों की जिंदगी अक्सर खेत–खलिहानों, पशुओं और मेहनत भरी दिनचर्या के इर्द–गिर्द घूमती है। लेकिन बीते कुछ सालों में गाँव की तस्वीर धीरे–धीरे बदल रही है। अब गाँव की महिलाएँ सिर्फ घर ही नहीं बल्कि व्यवसाय भी संभाल रही हैं। वे खेती और पशुपालन में हाथ बंटाने के साथ–साथ अचार, बड़ी, पापड़ और मोरब्बा बना रही हैं, अगरबत्तियाँ बना रही हैं, छोटे–छोटे व्यवसाय चला रही हैं और सूक्ष्म उद्यमों का संचालन भी कर रही हैं। गाँव के परिदृश्य में आए इस बदलाव के पीछे एक बड़ी वजह है– जीविका। वास्तव में जीविका की वजह से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सक्रियता बढ़ रही है। इससे न केवल महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त बनकर उभरी हैं बल्कि गाँवों की अर्थव्यवस्था में भी नयापन आ रहा है।

जीविका ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को संगठित करते हुए प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, वित्तीय सहयोग, बाजार से जुड़ाव जैसे उपायों से उन्हें विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों की ओर अग्रसर किया है। इससे ग्रामीण स्तर पर सूक्ष्म उद्यमों का विकास हो रहा है। जीविका के प्रयासों से न केवल महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता आ रही है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विस्तार भी हो रहा है।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के द्वारा मुख्य रूप से अचार, पापड़, अगरबत्ती, मसाले आदि का निर्माण, मुर्गी पालन, बकरी पालन, डेयरी उत्पादन, हस्तशिल्प, सिलाई–कढ़ाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर, फल–सब्जी विक्रय, दुकानदारी आदि व्यवसायों का संचालन किया जा रहा है। ग्रामीण स्तर पर संचालित इन सूक्ष्म व्यवसायों से महिलाओं को अच्छी आमदनी हो रही है।

ग्रामीण स्तर पर सूक्ष्म उद्यमों के विकास हेतु जीविका द्वारा किये जा रहे प्रयास :–

समूह से जुड़ाव : ग्रामीण स्तर पर जीविका द्वारा स्वयं सहायता समूह का गठन किया जाता है। समूह से जुड़कर महिलाएँ आपस में हर सप्ताह बचत करती हैं और आपसी सहयोग से ऋण लेकर छोटे व्यवसाय शुरू करती हैं।

प्रोत्साहन : समूह के माध्यम से महिलाओं को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इसके अलावा उन्हें नए उद्यम के क्षेत्र में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे ग्रामीण स्तर की महिलओं को व्यसाय की दुनिया में आगे बढ़ने का साहस आता है।

वित्तीय समावेशन : जीविका स्वयं सहायता समूहों को बैंक से जोड़कर उन्हें बैंक से ऋण उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अलावा उद्यमिता विकास हेतु सरकार की विभिन्न प्रकार की योजनाओं के तहत वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इससे महिलाओं के लिए उद्यम विकास हेतु पूँजीगत जरूरतें पूरी होती हैं।

प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास : महिलाओं को व्यवसाय से संबंधित प्रशिक्षण, मार्केटिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग आदि के बारे में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है। इससे महिलाओं को सूक्ष्म व्यवसाय के संचालन का हुनर मिलता है।

बाजार से जुड़ाव : जीविका महिला उत्पादों को मेलों, हाट बाजारों, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म और ''जीविका'' ब्रांड के माध्यम से बाजार तक पहुँचाने का कार्य करती है।

सरकार की योजनाओं का लाभ : जीविका के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में सही–सही जानकारी मिलना संभव हुआ है। इसके अलावा इन योजनाओं का लाभ लेने के बारे में भी उन्हें जानकारी मुहैया कराई जाती है। जीविका द्वारा मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम, पीएमएफएमई योजना के तहत महिलाओं को उद्यमिता अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

प्रभाव : जीविका द्वारा किये जा रहे उपरोक्त प्रयासों से ग्रामीण स्तर पर सूक्ष्म उद्यमों के विकास में मदद मिल रही है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित प्रकार के प्रभाव पड़ा है–

- **रोजगार सृजन :** स्थानीय स्तर पर नए रोजगार उत्पन्न होते हैं जिससे पलायन में कमी आती है।
- **महिला सशक्तीकरण :** महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, जिससे उनका सामाजिक दर्जा भी बढ़ता है।
- **स्थानीय आय में वृद्धि :** उद्यमों से प्राप्त आय परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारती है।
- **स्थानीय संसाधनों का उपयोग :** गांवों के संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है, जिससे टिकाऊ विकास संभव हो पाता है।

मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बनाई अपनी अलग पहचान

नालंदा जिला के चंडी प्रखंड अंतर्गत रुखाई पंचायत के अनन्तपुर गाँव की अनीता देवी ने जीविका की मदद से मशरूम उत्पादक एवं उद्यमी के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई है। अनीता देवी आज मशरूम और उससे बने उत्पादों की बिक्री से सालाना लगभग 13 से 14 लाख रुपये की आमदनी कर रही हैं।

12–13 साल पहले उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। पति के साथ मिलकर थोड़ी सी ज़मीन पर खेती कर जैसे–तैसे परिवार चल रहा था। 8 फरवरी 2012 को अनीता देवी ने शिवशंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अपने जीवन को एक नई दिशा दी। समूह से 10 हज़ार रुपये का कर्ज लेकर उन्होंने पारिवारिक ज़रूरतों को पूरा किया। समूह की बैठकों में रोजगार से जुड़ी जानकारी मिलती रही। एक ग्राम संगठन की बैठक में मशरूम की खेती की जानकारी से वे बेहद प्रभावित हुईं और प्रशिक्षण लेने का निर्णय लिया।

प्रशिक्षण के बाद एक छोटे से कमरे में मशरूम उत्पादन शुरू किया, जिससे अच्छी आमदनी हुई। धीरे–धीरे किराये पर बड़ी जगह लेकर उत्पादन का विस्तार किया। वर्ष 2016 में 12 दीदियों के साथ मिलकर 'माधोपुर फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' की स्थापना की। आज कंपनी मशरूम के साथ–साथ सूखा मशरूम, मशरूम पाउडर, अचार और लड्डू का भी व्यवसाय कर रही है और अब तक लगभग 5 करोड़ 30 लाख रुपये का कारोबार कर चुकी है।

8 मार्च 2025 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने ट्विटर हैंडल से उनकी कहानी साझा की। अनीता देवी को "वीमेन ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया–2022", विजयलक्ष्मी दास पुरस्कार–2023, नवाचार किसान पुरस्कार–2021 और धानुका नवाचार कृषि पुरस्कार–2020 से सम्मानित किया जा चुका है।

चंपा दीदी बनी ड्रोन दीदी

बक्सर जिला के केसठ प्रखंड अंतर्गत रामपुर पंचायत के शिवपुर गाँव की रहने वाली चंपा देवी आज अपने इलाके में 'ड्रोन दीदी' के नाम से जानी जाती हैं। पहले एक सामान्य गृहिणी रहीं चंपा दीदी ने वर्ष 2016 में श्रीहरी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अपने जीवन में बदलाव की शुरुआत की। उन्होंने पहली बार कृषि कार्य के लिए समूह से 15,000 रुपये का ऋण लिया और उसे खेती में निवेश किया।

वर्ष 2017 से पहले घर से बाहर निकलना उनके लिए चुनौती था, लेकिन जब वह जीविका की ओर से विलेज रिसोर्स पर्सन (वी.आर.पी) बनीं, तो खेती से उनका जुड़ाव और गहरा हो गया। नेट हाउस की मदद से वह सब्जी की खेती भी करने लगीं। इसी दौरान उन्हें केंद्र सरकार की 'नमो ड्रोन दीदी योजना' के तहत कृषि ड्रोन पायलट का प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला।

चंपा देवी बक्सर जिला की पहली महिला हैं जिन्होंने कृषि ड्रोन उड़ाने की ट्रेनिंग ली है। अब तक उन्होंने हैदराबाद, मोतिहारी, गोरखपुर और अपने गाँव में कुल चार बार प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जनवरी 2024 के बाद से लोग उन्हें उनके पति के नाम से नहीं, बल्कि 'ड्रोन दीदी' के नाम से पहचानने लगे हैं, जिससे वे खुद को गौरवान्वित महसूस करती हैं।

कृषि उद्यमी के रूप में चयनित होने के बाद उन्हें कृषि विभाग से खाद एवं बीज की दुकान खोलने की अनुमति मिली है। अब वे अन्य दीदियों को भी आधुनिक कृषि तकनीकों के लिए जागरूक कर रही हैं। खेती और दुकान से उनकी मासिक आमदनी 10,000 रुपये से अधिक हो गई है।

एक कदम स्वावलंबन की ओर

सारण जिले के मशरख प्रखंड अंतर्गत हंसपीर गाँव की रहने वाली उषा देवी आज महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण उद्यमिता का एक प्रेरक उदाहरण हैं। दसवीं तक शिक्षित उषा देवी कमल जीविका स्वयं सहायता समूह और कमला ग्राम संगठन की सक्रिय सदस्य हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने वस्त्र निर्माण व्यवसाय की शुरुआत की और अपने दृढ़ निश्चय, मेहनत और जीविका परियोजना के सहयोग से इसे एक सफल उद्यम में बदल दिया।

अपने व्यवसाय को शुरू करने के लिए उषा देवी ने समूह से 40,000 रुपये ऋण लिया था, जिसे उन्होंने समय पर चुकता कर दिया। वह कहती हैं कि "जीविका परियोजना ने न केवल आर्थिक सहायता दी, बल्कि प्रशिक्षण, उत्पादन विधि, विपणन और बिक्री के अवसर भी उपलब्ध कराए।" उन्होंने न केवल अपने वस्त्र निर्माण संयंत्र का विस्तार किया, बल्कि बाजार में बिक्री के नए अवसर भी तलाशे।

जीविका के माध्यम से उन्हें सरस मेला, सोनपुर मेला और अन्य मेलों में भाग लेने का अवसर मिला, जहाँ उनके उत्पादों की अच्छी बिक्री हुई। इससे उनकी मासिक आय बढ़कर 70,000 से 80,000 रुपये तक पहुँच गई है।

अब उनका परिवार पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया है। उनकी दो बेटियाँ हैं, जिन्हें वह अच्छी शिक्षा दिला रही हैं। पहले जो शिक्षा एक चुनौती थी, वह अब उनकी प्राथमिकता बन गई है।

आज उषा देवी न सिर्फ एक सफल महिला उद्यमी हैं, बल्कि एक जागरूक नागरिक भी हैं। उनका सपना है कि बिहार के युवा पलायन न करें, बल्कि गांव में रहकर ही कुछ उद्यम करें। उनका संघर्ष और सोच आज कई ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

साहस, समर्थन और मेहनत का संगम

कटिहार जिले के बरारी प्रखंड अंतर्गत सुजापुर गांव की रहने वाली रीना देवी की जिंदगी कभी तंगी और कर्ज से जूझ रही थी। उनकी शादी एक छोटे किसान परिवार में हुई थी, जहाँ थोड़ी–सी जमीन, बड़ा खर्च और साहूकारों के कर्ज का बोझ था। खेती से आमदनी कम और ब्याज का दबाव अधिक। ऐसे हालात में वर्ष 2014 में रीना देवी ने 'माँ दुर्गा स्वयं सहायता समूह' से जुड़कर अपने जीवन की दिशा बदलनी शुरू की। शुरू में घर वालों की नाराज़गी झेली, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और समूह की बैठकों में हिस्सा लेकर बचत शुरू की।

वर्ष 2016 में जब 15 समूहों से मिलकर 'सागर जीविका महिला ग्राम संगठन' बना, तो रीना देवी ने इसमें भी सक्रिय भूमिका निभाई। इसी दौरान उन्होंने ड्रैगन फ्रूट की खेती का साहसी निर्णय लिया। वर्ष 2018 में समूह से 30,000 रुपये और बैंक से 20,000 रुपये ऋण लेकर खेती शुरू की। दो साल तक केवल देखभाल में समय गया, लेकिन वर्ष 2020 में पहली बार 4 क्विंटल ड्रैगन फ्रूट का उत्पादन हुआ, जिसे पूर्णिया बाजार में बेचकर उन्हें आय हुई और हौसला भी बढ़ा।

वर्ष 2022 में उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्होंने फिर से 30,000 रुपये का ऋण लिया। अब वे हर साल 7–10 क्विंटल ड्रैगन फ्रूट का उत्पादन कर रही हैं, जिससे सालाना 7 से 8 लाख रुपये की कमाई हो रही है। नवंबर 2023 में उन्होंने समूह से 2 लाख रुपये ऋण लेकर 10 बीघा जमीन पर मक्का की खेती भी शुरू की, जिससे उन्हें 400 क्विंटल उत्पादन और अच्छी आय हुई।

आज रीना देवी "लखपति दीदी" के नाम से जानी जाती हैं। वे आत्मनिर्भर हैं, समाज में पहचान रखती हैं और सैकड़ों महिलाओं के लिए प्रेरणा हैं।

लहठी व्यवसाय से स्वीटी को मिली नई पहचान

बेगूसराय जिला के मटिहानी प्रखंड के मटिहानी–1 पंचायत की स्वीटी की शादी महज 14 वर्ष में उस समय कर दी गयी जब वह आठवीं की छात्रा थीं। शादी के बाद भी स्वीटी का जज्बा और हिम्मत में कमी नहीं आई और उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई की। उनके पति खेती और पशुपालन का कार्य किया करते थे लेकिन उनकी आमदनी परिवार की जरूरतों के लिए पर्याप्त नहीं थी। आर्थिक कठिनाईयों के कारण स्वीटी एवं उनके परिवार को निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इन समस्याओं के बीच स्वीटी कुछ नया करना चाहती थी। उनकी इच्छा थी कि वह अपने परिवार को आर्थिक समस्या से मुक्ति दिला सके।

इसी बीच स्वीटी 2019 में पवन जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया। बचत, लेन–देन, लेखांकन जैसी गतिविधियों ने स्वीटी के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त कर दिया। आवश्यकतानुसार व्यवसाय एवं अन्य कार्यों के लिए उन्होंने समूह से उन्होंने ऋण लिया। ऋण का बेहतर उपयोग के साथ ही उन्होंने इसे ससमय वापस भी कर दिया।

इसी बीच समूह से ऋण लेकर स्वीटी ने लहठी बनाने का कार्य प्रारंभ किया। लहठी बनाने के प्रशिक्षण के बाद उन्होंने अपने घर पर ही लहठी बनाने का कार्य शुरू किया। उनके मेहनत एवं प्रयास से उनके व्यवसाय को गति मिल गयी। उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार आने लगा।

इस कार्य को पहले स्वीटी एवं उनके पति द्वारा ही संचालित किया जाता था, लेकिन जैसे–जैसे उनका कारोबार बढ़ने लगा तो उन्होंने स्थानीय लोगों को कारीगर के रूप में अपने साथ जोड़ लिया। आज इनके द्वारा निर्मित लहठी की मांग बेगूसराय के हर दुकान में है। सरस मेला, बिहार दिवस, जिला स्थापना दिवस आदि मौकों पर भी स्वीटी अपनी लहठी की बिक्री करती हैं। उन्हें अपने लहठी के व्यवसाय से महीने में 15 से 20 हजार की कमाई हो जाती है। इनके पति खेती और पशुपालन के कार्य से जुड़े हैं। इस कार्य से भी उन्हें अलग से आमदनी हो रही है।

स्वीटी बताती हैं कि–'जीविका की मदद से लहठी निर्माण एवं विपणन का व्यवसाय प्रारंभ किया। शुरूआती समय में थोड़ी कठिनाई आई लेकिन धीरे–धीरे हर प्रकार की व्यवसायिक समझ मुझमें आती गयी। आज इसी का परिणाम है कि मेरा व्यवसाय बेहतर तरीके से संचालित है और मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। अपने उद्यम के कारण मेरी नई पहचान बनी है।' स्वीटी आज एक कुशल एवं सफल उद्यमी के साथ समाज में लखपति दीदी के रूप में अपनी नई पहचान स्थापित कर ली हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार